

ماہنامہ
شعاع عمل
دسمبر ۲۰۱۷ء
لکھنؤ



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/- December 2017 Per Copy- Rs.25/-

شُأ-ا-امل

ہندی، اردو، ماسیک پتریکا لکھنؤ



سید العلماء آیہ اللہ العظمیٰ سید محمد ابراہیم نقوی فردوس مکان
ولادت ۱۰ جمادی الثانیہ ۱۲۵۱ھ مطابق ۹ جولائی ۱۸۳۳ء
وفات ۲۰ جمادی الاول ۱۳۰۷ھ مطابق ۱۲ جنوری ۱۸۹۰ء

Lucknow



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufan Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नकवी
- ⇒ हैदर अब्बास नकवी, इलाहाबाद
- ⇒ अमील शम्सी, लखनऊ
- ⇒ वासिफ अहमद नकवी 'समीर'
- ⇒ महदी रज़ा
- ⇒ शाहिद अली आजमी
- ⇒ जुलफ़ेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ⇒ डॉ० आरिफ़ अब्बास
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ सलमान हुसैन, लखनऊ
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- ⇒ अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नकवी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼
Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019

WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

दिसम्बर 2017 ई०
रबीउल अव्वल 1439 हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	शहीदे इन्सानियत (किस्त-9) आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	5
2.	मज़हब या ज़मीर (किस्त-1) आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नकवी	12
3.	मुख्य समाचार इदारा	17

मासिक

“शुआ-ए-अमल”

(हिन्दी-उर्दू)

“ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”

दैनिक नकीब लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

Per Copy 25/-
Annual 200/-

कुल पृष्ठ : 72

ISSN 2456-8384

वर्ष
14

अंक
6

न्यास संस्थापन

15 जमादिलउला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलउला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:

मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नकवी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन जफर नकवी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिजवी, लखनऊ
- प्रोफेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- डॉ० अरशद अली जाफरी, लखनऊ
- शायरे अहलैबैत रजा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ तकी नकवी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

बिस्मिल्ली तआला

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

दिसम्बर—2017 ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिल्लत प्रोफेसर मौलाना सै० कल्बे जवाद नकवी साहब

माननीय नवाब रजा साहब, भोपाल

माननीय सै० अहमद अब्बास नकवी साहब, मुम्बई

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नकवी ‘असीफ़’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नकवी ‘तज़हीब’ नगरौरी

आसिफ़ अब्बास नौगांवी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी द्वारा स्वामी एस कल्बे जवाद नकवी के लिए निजामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोजिट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी

दिसम्बर-2017

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

'kghn: bu l kfu ; r

vk; rYykfgy mte k l; ;ny myek ekYkuk lO vyh udh udoh rkck l jkg

इन्हे जुरैर की रिवायत यह है कि किसी ने ख़बर उड़ा दी कि कैस बिन सअद क़त्ल हो गए। बस उस पर यह ग़दर मच गया और वह ख़ैमा जिसमें इमाम हसन^{अ०स०} का क़याम था लूट लिया गया। यहाँ तक कि जिस बिछौने पर आप थे उसे आपके नीचे से खींच लिया गया।¹

उसके बाद आप मदाएन की तरफ़ रवाना हो गए मगर वहाँ पहुंचने पर जर्ज़ह बिन कबीसा असदी ने जो उन्हीं ख़वारिज में से था कमीनगाह में छुप कर खंजर से हमला कर दिया जिससे आप ज़ख्मी हो गए अरसे तक मदाएन में इलाज के बाद आप अच्छे हुए और फिर मुआविया से मुक़ाबिला की तैयारी की।

मुआविया ने आपके पास पैग़ाम भेजा कि आप जिन शराएत पर चाहें मैं सुल्ह करने पर तैयार हूँ और उसके साथ आपकी फ़ौज के उन सरदारों के खुतूत भी रवाना कर दिये जिन्होंने खुफ़िया तरीक़े पर मुआविया से साज़ बाज़ करना चाही थी और दावत दी थी कि आप आईये तो हम हसन^{अ०स०} को गिरफ़्तार करके आपके सिपुर्द कर देंगे या उनको क़त्ल कर डालेंगे।²

इमाम हसन^{अ०स०} पहले ही अपने साथियों की ग़द्दारी से वाकिफ़ थे और इसलिए जंग को मुनासिब वक़्त ख़याल नहीं करते थे लेकिन यह ज़रूर चाहते थे कि कोई सूरत ऐसी पैदा हो कि बातिल की हिमायत का धब्बा भी मेरे

दामन पर न आने पाये। इस ख़ानदान के लोगों को हुकूमत व इक़तेदार की तो हवस कभी रही नहीं, उन्हें तो मतलब इससे था कि मख़लूक़े खुदा की बेहतरी हो और हुदूद व हुकूके इलाही का इजरा (राएज) हो। अब मुआविया ने जो आप से मुँह मांगे शराएत पर सुल्ह करने की आमादगी ज़ाहिर की तो आपने अपने नाना और बाप की देखी हुई सीरत के मुताबिक़ मसालिहत के बढ़ते हुए हाथ को नाकाम वापस नहीं किया। आपने सुल्ह के शराएत मुरत्तब करके मुआविया के पास रवाना किये। वह तमाम शराएत जिन से क़ानूनी तौर पर आईन व शरीयत का तहफ़फ़ुज़ हो जाता है। चुनानचे सुल्ह की दस्तावेज़ मुकम्मल हुई और जंग का ख़ातिमा हो गया। हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} अपने बाप की वफ़ात के बाद अपने बड़े भाई हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} के साथ उन सर्द व गर्म हालात का बराबर मुतालिआ कर रहे थे। उन्होंने उन वाक़ेयात पर कभी एक ग़ैर मुतअल्लिक़ इन्सान की तरह नज़र नहीं डाली बल्कि वह उसको अपनी सरगुज़़िशत (सानेहा) समझते थे और जानते थे कि हमें इसी हाल पर मुस्तक़िबल की इमारत को बलन्द करना है। उस वक़्त के वाक़ेयात का यह पहलू बहुत अहम था कि साथियों की कसरत और जमइयत पर एतेमाद का ख़याल कुल्लियतन दूर अज़ कार (सिरे से ग़लत है) है। हुसैन^{अ०स०} अपने वालिदे बुजुर्गवार के साथ एक दफ़ा उन साथियों के अमल को देख चुके थे कि वह उनके सामने तलवारें

¹ तबरी जि/6 पेज/92

² सही बुख़ारी जि/2 पेज/71, इरशाद पेज/195

खींच कर आ गए और अब अपने बड़े भाई के साथ साथियों के तर्ज अमल को देख लिया कि खुद अपनी फौज के हाथों किस तरह उनके भाई की जान खतरे में पड़ गई थी। मुमकिन है किसी वजह से उस वक्त हुसैन^{अ०स०} अपने बड़े भाई के पास मौजूद न हों और ऐसा ही मालूम होता है। इसलिए कि उस सख्त और नागवार मौके पर कोई तज़क़िरा इमाम हुसैन^{अ०स०} का नज़र नहीं आता मगर उन्होंने यकीनन उन हालात को दर्दमन्दाना तरीके पर सुना और उस ज़ख्म को देखा होगा जो उनके भाई के जिस्म पर खुद अपने साथ वालों में से किसी के हाथ से आ गया था और उसका असर उनके हस्सास दिल पर जितना भी हुआ हो वह कम है।

इसके अलावा आपने अपने बुजुर्गों की सीरत में एक दफ़ा यह नमूना और देख लिया कि अम्ने आलम के लिए नुक़त-ए-अव्वल सुल्ह व सलामती हैं जंग का दर्जा सुल्ह के बाद है और सुल्ह के इमकानात पैदा होने तक है इसलिए सुल्ह के ख़याल को जंग के पहले और जंग के दौरान में हमेशा पेशे नज़र रखना चाहिए। दुश्मन से सुल्ह की गुप्तगू को कभी अपनी खुद्दारी के ख़िलाफ़ न समझो चाहे जज़बाती लोग इस पर मोतरिज़ भी हों और चाहे उसके लिए तुम्हें अपने जाह व इक्तेदार राहत व आराम या किसी दूसरे शख़्सी मफ़ाद की कुर्बानी भी कर देना पड़े मगर यह ख़याल ज़रूरी है कि इस सुल्ह के अन्दर कोई ऐसा उसूल पामाल न होने पाये जिसका महफूज़ रखना बहरहाल अपना मुक़द्दस फ़रीज़ा है। यही नमूना हुसैन^{अ०स०} ने अपने नाना से देखा था, यही उनको अपने बाप के यहाँ नज़र आया और यही अब उनको अपने वाजिबुल

इताअत भाई इमाम हसन^{अ०स०} की जानिब से पेशे नज़र था।

एक बात ज़िम्नी तौर पर और दोबारा सामने आ गई। वह यह कि सच्चाई के रास्ते में अगर इतमामे हुज्जत की ज़रूरत हो तो दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन के भी इक़्रार पर भरोसा कर लेना चाहिए।

इस सुल्ह नामें के मुकम्मल शराएत जो अल्लामा इब्ने हज़र मक्की ने दर्ज किये हैं हस्बे ज़ैल हैं।³

1- यह कि मुआविया हुकूमते इस्लाम में किताबे खुदा और सुन्नते रसूल और सही रास्ते पर चलने वाले खुलफ़ा-ए-राशेदीन के तरीके पर अमल करेंगे।⁴

2- यह कि मुआविया को अपने बाद किसी ख़लीफ़ा के नामज़द करने का हक़ न होगा।

3- यह कि शाम व इराक़ व हिजाज़ व यमन सब जगह के लोगों के लिए अमान होगी।

4- यह कि हज़रत अली^{अ०स०} के असहाब और षिया जहाँ भी रहें उनके जान व माल व नामूस व औलाद महफूज़ रहेंगे।⁵

5- यह कि मुआविया हसन इब्ने अली^{अ०स०} और उनके भाई हुसैन^{अ०स०} और किसी को भी ख़ानदाने रसूल^{स०अ०} में कोई नुक़सान पहुँचाने या उनकी जान लेने की कोशिश न करेंगे। न खुफ़िया तरीके पर और न ऐलानिया और उनमें से किसी को किसी जगह धमकाया, डराया और दहशत में मुबतिला नहीं किया जायेगा। यह मुआहिदा रबीउल अव्वल या जमादिउल ऊला सन 41 हिजरी को अमल में आया।

³ सवाएके मुहरिका पेज/81

⁴ शिया माख़ज़ों (Writers) में इस शर्त के आख़िरी जुज़ का ज़िक्र नहीं है।

⁵ इस शर्त के सुबूत के लिए मुलाहिज़ा हो तबरी जि/6 पेज/97

अगर गौर किया जाये तो इस सुल्ह के ज़रिये से हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} ने वह मक़सद हासिल कर लिया था जिसके लिए उनकी अपने फ़रीके मुख़ालिफ़ से (मुनाज़ेअत) लड़ाई थी।

इसमें कोई शुबहा नहीं कि यह हज़रात ज़ाती अग़राज़ (फ़ाएदों) के लिए किसी से मुख़ासिमत (दुश्मनी) नहीं रखते थे। उनकी लड़ाई जो कुछ थी वह उसूले शरीयत व मज़हब के लिए। हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} ने सुल्ह नामे की पहली शर्त के लिहाज़ से अमीरे षाम को पाबन्द बना दिया था कि वह किताब व सुन्नत के मुताबिक़ अमल करें। इससे आपने एक तरफ़ तो यह बात हमेशा के लिए मुसल्लम बना दी कि उसूले शरीयत और है आईने हुकूमत और है। यह वह बड़ी चीज़ थी जिसके लिए आले मोहम्मद बराबर कोशों रहे थे यानी कभी ऐसा न हो कि हुक्कामे इस्लाम का तर्ज़े अमल ऐने शरीयत समझ लिया जाये। दूसरा अम्र यह भी आपने साबित कर दिया बल्कि फ़रीके मुख़ालिफ़ से तस्लीम करा लिया कि अब तक जो कुछ हुकूमते शाम का रवैया रहा है वह किताब और सुन्नत के मुताबिक़ नहीं है क्योंकि हर शख्स जानता है कि सुल्हनामे की बुनियादी चीज़ें वही होती हैं जो दो फ़रीकों में बेनाए मुख़ासिमत (लड़ाई की बुनियाद) हों। अगर हुकूमते शाम का साबिका तर्ज़े अमल अब तक बराबर किताब व सुन्नत के मुताबिक़ होता तो इस शर्त की ज़रूरत क्या थी। इसके बाद दूसरी अहम शर्त यह करार दी कि उनको अपने बाद किसी को नामज़द करने का हक़ न होगा। इस तरह आपने मुसतक्बिल का तहफ़फ़ुज़ किया क्योंकि यह मुमकिन था कि मुआविया अपनी ज़िन्दगी भर किताब और सुन्नत के मुताबिक़ अमल करते लेकिन बाद

में कोई ऐसा आता जो इसके ख़िलाफ़ करता। इसलिए आपने आइन्दा के लिए जानशीन बनाने के हक़ को सल्ब (छीन) कर लिया।

बहर हाल सुल्ह हो गई। फ़ौजें वापस चली गईं और मुआविया की गिरफ़्त तमाम ममालिक इस्लामिया पर मज़बूत हो गई और अब शाम व मिस्र के साथ इराक़ व हिजाज़, यमन और ईरान वगैरह भी उनके तसरूफ़ में आ गए। हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} को इस सुल्ह के बाद अपने साथ के बहुत से लोगों की तरफ़ से इन्तेहाई दिलख़राश और तौहीन आमेज़ अलफ़ाज़ सुनना पड़े जिनका बर्दाश्त करना उन्हीं का काम था। बाज़ लोग ऐसे जो कल तक “अमीरुल मोमिनीन” कहकर तस्लीम बजा लाते थे आज “मुज़िल्लुल मोमिनीन” यानी मोमिनीन की जमाअत को ज़लील करने वाले” के अलफ़ाज़ से सलाम करते थे मगर इमाम हसन^{अ०स०} ने सब्र व इस्तेक़लाल और नफ़्स की बलन्दी के साथ इन तमाम नागवार हालात को बरदाश्त किया और मुआहिदे पर सख्ती के साथ कायम रहे लेकिन मुआविया ने जंग के ख़त्म और सियासी इक़तेदार के कायम होते ही इराक़ में दाख़िल होकर नख़ीला में जिसे कूफ़े की सरहद समझना चाहिए कायम किया। और जुमे के खुतबे के बाद यह ऐलान कर दिया कि मेरा मक़सद जंग से यह न था कि तुम लोग नमाज़ पढ़ने लगो। रोज़े रखने लगो, हज़ करो या ज़कात अदा करो। यह सब तो तुम करते ही हो। मेरा तो मक़सद जंग से फ़क़त यह था कि मेरी हुकूमत तुम पर मुसल्लम हो जाये। वह हसन^{अ०स०} के इस मुआहिदे के बाद मुकम्मल हो गई और बावजूद तुम लोगों की नागवारी के खुदा ने मुझे इस मतलब में कामयाब कर दिया। रह गए वह शराएत जो मैंने हसन^{अ०स०} के साथ किये हैं

वह सब मेरे पैरों के नीचे हैं और उनका पूरा करना या न करना मेरे हाथ की बात है।⁶ मजमे में एक सन्नाटा छाया हुआ था मगर अब किस में दम था कि वह उसके खिलाफ़ लबकुशाई (मुँह खोलना) करता।

इक़तेदारे शाही की ज़ुरअत इस नुक़्ते तक पहुँची कि कूफ़े में इमाम हसन^{अ०स०} और इमाम हुसैन^{अ०स०} की मौजूदगी में मुआविया ने हज़रत अमीर^{अ०स०} और इमाम हसन^{अ०स०} की शान में ना-सज़ा कलेमात इस्तेमाल किये। इस पर सुकूत करना एतेराफ़ व इकरार का मुरादिफ़ (बराबर) समझा जा सकता था। इसलिए फ़ौरन इमाम हुसैन^{अ०स०} जवाब देने के लिए खड़े हो गए मगर हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} ने आपको बिठा दिया और खुद खड़े होकर निहायत मुख़्तसर और जामे अलफ़ाज़ में अमीरेशाम की तक़रीर का जवाब दिया।⁷ हुसैन^{अ०स०} जानते तो पहले ही थे मगर उस वक़्त महसूस कर लिया था कि हालात की रफ़्तार क्या है और हम को इसका आख़िरी मुक़ाबिला किस तरह करना होगा। मगर वह जल्दबाज़ इन्सान न थे, न वह ज़िम्मेदारियों के महल से ना-वाकिफ़ थे। इन्हीं सब्र आज़मा इन्तेज़ार के साथ हालात की तदरीजी रफ़्तार (धीरे धीरे) के दोश ब-दोश अपने किरदार की मन्ज़िल को आगे बढ़ाना था और उसके पहले एक फ़र्ज़ शनास इन्सान की तरह अपने भाई के साथ वक़्त की मौजूदा साकिन मगर पुर इज़्तिराब (बेचैनी) ख़ामोशी में गर्क रहना था।

हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} ने उमूरे सलतनत से किनारा कशी इख़्तियार करने के बाद कूफ़े का क़याम तर्क करके फिर से मदीने में जाकर सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई तो हुसैन^{अ०स०} ने भी भाई का साथ दिया और मदीने में जाकर

क़याम फ़रमाया। मगर इस इत्तेहादे अमल के बावजूद भी बनी उमय्या ने यह ग़लत शोहरत दी कि इस सुलह के बारे में हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} और इमाम हुसैन^{अ०स०} दोनों भाईयों की यक़जेहती (एकता) में वाक़ई कोई फ़र्क़ आ जाये मगर उनके तमाम तवक्कुआत (अन्देशे) बिल्कुल ग़लत साबित हुए।

इमाम हुसैन^{अ०स०} कौल, अमल और मसलक में अपने भाई इमाम हसन^{अ०स०} के साथ बिल्कुल मुत्तहिद थे और हमेशा रहे। आपको मालूम था कि इमाम हसन^{अ०स०} ने अगरचे इतमामे हुज्जत के लिए ख़ामोशी और गोशा नशीनी इख़्तियार कर ली है मगर ख़याल इनका भी यही है कि आख़िर में फिर तलवार दरमियान में आयेगी और आख़िरी फ़ैसला बग़ैर एक सख़्त और मुशकिल अक़दाम के न हो सकेगा और वह इसके लिए तय्यार भी हैं ब-शर्तेकि हालात की तदरीजी (धीरे धीरे) रफ़्तार इन्हीं के दौरे हयात में इस आख़िरी नुक़्ते तक पहुँच जाये। जो इस आख़िरी इक़दाम के लिए ज़रूरी है। इमाम हसन^{अ०स०} अक्सर यह अशआर ब-तौरै तम्सील (मिसाल) पढ़ा करते थे।

euvkt fcLlfQ vdkk QjIrg
ekru vyk vtfyu vkvk'k eUr lQk
ykrjdcI lgy bUuLlgy eQfInk
yurnjdy eftn gRrk rjdcvk vukQk

“जो तलवार को अपना पुश्त पनाह बनाये वह अजीब सुकून व इतमिनान हासिल करेगा या दुनिया से जल्द ही गुज़र जाना और या ज़िन्दगी ऐसी जो दाद रसी के साथ हो। कभी सहूलत पसन्दी से काम न लो। सहूलत पसन्दी बड़ी ख़राबी की बात है। इज़्ज़त हासिल कर ही नहीं सकते जब तक कि दुशवार गुज़ार मन्ज़िल को तय न करो।”⁸

⁸ किताबुल-बिलदान ले-इब्नुल फ़िक्हीह अल-हम्दानी तबअ लीदन पेज/53

⁶ इरशाद पेज/196

⁷ इरशाद पेज/196

रह गये मौजूदा हालात, उनके लिहाज़ से इमाम हुसैन^{अ०स०} भी इस सुल्ह से मुत्तफ़िक़ थे चुनौनचे ब—रिवायत दीनवरी जब हुज़्र बिन अदी और उबैदा बिन अम्र जो सुल्ह के मुआमले में एख़तेलाफ़ रखते थे इमाम हुसैन^{अ०स०} के पास आये और कहा: आप लोगों ने इज़्ज़त के बदले में ज़िल्लत को ख़रीद लिया। कम हुकूक हासिल करके बहुत से हुकूक से दस्तकशी (हाथ खींचना) कर ली। अच्छा अब आप ब—ज़ाते खुद आज हमारी एक बात मान लीजिये फिर कभी कोई बात न मानियेगा। वह यह है कि आप हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} को तो इस सुल्ह के रास्ते पर जो उन्होंने इख़्तियार किया है छोड़ दीजिये। लेकिन आप अपने साथियों को जो कूफ़े में या कूफ़े के बाहर हैं, जमा कीजिये और हम दोनों को मुक़द्दमतुल जैश (थोड़ा लश्कर जो बड़ी फौज के आगे चले) का अफ़सर बना दीजिये। फिर देखियेगा कि मुआविया को ख़बर भी न होगी और हम अचानक तलवारें मारते हुए नज़र आयेंगे। हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} ने फ़रमाया: यह नहीं हो सकता। हम अहेद कर चुके और कौल व करार हो चुका। इसी तरह अली बिन मोहम्मद बिन बशीर हमदानी का बयान है कि मैं सुफ़ियान बिन अबी लैला की मर्इयत में मदीना पहुँचा और इमाम हसन^{अ०स०} के पास मिलने गया। आपके पास उस वक़्त मुसय्यब बिन नुजबा, अब्दुल्लाह बिन दवाक़ तमीमी और सिराज बिन मालिक ख़शई मौजूद थे। मैंने कहा: अस्सलामु अलैका या मुज़िल्लुल मोमिनीन। सलाम हो आपको ऐ मोमिनीन को ज़लील करने वाले।” आपने फ़रमाया: व अलैकस्सलाम। बैठो मैं मोमिनीन की ज़िल्लत का बाइस नहीं हूँ। मैंने तो उनकी इज़्ज़त रख ली और उनको खूँरेज़ी से बचा लिया। मैं देख रहा था कि अब

जंग का जोश और वलवला बाकी नहीं है और कमज़ोरी नुमायाँ है। मैं देख रहा था कि अगर जंग जारी रखी गई तब भी एक दिन यही होना है कि मुआविया की बादशाहत कायम हो जाये।” अब यह लोग हज़रत के पास से उठकर इमाम हुसैन^{अ०स०} के पास गए और पूरी गुप्तगू हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की बयान की। आपने फ़रमाया सच कहा अबू मोहम्मद (हज़रत हसन^{अ०स०}) ने। तुम्हें लाज़िम है कि हर शख्स तुम में से ख़ामोश होकर घर में बैठ जाये और बैठा रहे उस वक़्त तक कि जब तक यह शख्स (मुआविया) जिन्दा है।⁹

यह आख़िरी फ़िक़रा दर हकीकत बड़ा दूर रस था। आप समझते थे कि मुआहिदे की पाबन्दी नहीं होगी और आप जानते थे कि यह मुआहिदा मौत की आख़िरी हिचकी उस वक़्त लेगा जब मुआविया दुनिया से जाने लगेंगे। और अपने बाद जानशीन नामज़द कर जायेंगे। वह वक़्त होगा जब हमारी जानिब से कोई दूसरा इक़दाम किया जाये। आइन्दा चल कर दुनिया को हुसैन^{अ०स०} के तदब्बुर की दाद देना पड़ेगी जिन्होंने बीस बरस पहले यानी सन 41 हिजरी की तस्वीर अपनी आँख से देख ली और हुसैन^{अ०स०} की पेश बीनी अईन्दा चलकर हर्फ़ ब—हर्फ़ पूरी हो कर रही।

इस मुआहिदे के बाद अब बनी उमैया की कूव्वत बहुत मुस्तहक़म हो गई थी। उनके रास्ते में जो एक ख़रख़ा (रुकावट) था वह बिल्कुल दूर हो गया था। और इन्हें अपनी स्कीम को पूरा करने का पूरा मौका मिल गया था। चुनौनचे जितनी शर्तें हुई थीं सबकी मुख़ालिफ़त की गई और किसी एक पर भी अमल न हुआ।¹⁰

⁹ अख़बारुत्तवाल पेज / 222

¹⁰ तबरी जि / 6, पेज / 93

पहली शर्त यह थी कि किताबे खुदा और सुन्नते रसूल^{स०अ०} पर अमल होगा। यह शर्त मुसलमानों के किसी फ़िर्के के नज़दीक भी पूरी नहीं हुई। शियों का अकीदा तो इस बारे में ज़ाहिर है और अहले सुन्नत के नुक़त-ए नज़र से हज़रत रसूल अल्लाह^{स०अ०} की वफ़ात के बाद सिर्फ़ तीस बरस तक ख़िलाफ़ते राशिदा रही है और यह तीस बरस की मुद्दत ख़त्म हो जाती है। हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की सुलह पर। उसके बाद मुलूकियत व जहाँबानी और दुनिया दारी है, ख़िलाफ़ते राशिदा नहीं है। अगर यह शर्त पूरी हुई होती कि किताबे खुदा और सुन्नते रसूल^{स०अ०} पर अमल हो तो कोई वजह न थी कि मुआविया की हुकूमत ख़िलाफ़ते राशिदा के हुदूद से ख़ारिज होती। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ तक के बारे में यह कहा गया है कि उनका ज़माना ख़िलाफ़ते राशिदा से मिलता जुलता है मगर फ़ासिला होने की वजह से इसमें महसूब (शुमार) नहीं हुआ। मगर मुआविया के दौरे हुकूमत के मुतअल्लिक किसी ने यह राय ज़ाहिर नहीं की। मालूम हुआ कि तमाम मुसलमानों के नज़दीक इस शर्त पर अमल नहीं हुआ। इसके अलावा वाक़ेआत से भी यही ज़ाहिर होता है। इसकी चन्द मिसालें ज़ैल में दर्ज की जाती हैं।

इनमें से एक बात थी सियासी मसालेह (Adviser) की बिना पर ज़ियाद बिन सुमय्या को अपने बाप का नाजाएज़ फ़रज़न्द बना कर अपना भाई करार देना हालाँकि इस्लाम में नाजाएज़ फ़रज़न्द को नसब में शरीक नहीं किया गया है। तफ़सील इसकी यँ है कि ज़ियाद पहले ज़ियाद बिन उबैद कहलाता था क्योंकि उसकी माँ सुमय्या एक सक़फ़ी कबीले वाले शख्स के गुलाम उबैद की ज़ौजियत में

थी और यह खुद हारिस बिन कल्दा की कनीज़ थी। हारिस ने इसको आज़ाद कर दिया तब इसके यहाँ ज़ियाद पैदा हुआ और इसलिए ज़ियाद गुलामी से ख़ारिज रहा और बढ़ा तो बड़ा समझदार और ज़हीन और अक्लमन्द और अदीब देखा गया। मुगीरा बिन शअ्बा जब ख़लीफ़-ए-दुवुम की तरफ़ से बसरा के हाकिम हुए तो वह ज़ियाद को अपने साथ बसरा ले गए और वहाँ उसे लिखना पढ़ना सिखलाया। जब हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ख़लीफ़ा हुए तो आपने ज़ियाद को सरज़मीने फ़ारस का गवर्नर बनाया। आपकी शहादत के बाद मुआविया ने ज़ियाद को एक तहदीद आमेज़ (धमकाने वाला) ख़त लिखा जिस पर ज़ियाद ने मज्म-ए-आम में खुत्बा पढ़ा और कहा कि जिगर ख़्वारा का लड़का और निफ़ाक़ का मरकज़ और दुश्मनाने इस्लाम का सरदार मुझे डराना चाहता है? हालाँकि मेरे और उसके दरमियान रसूल अल्लाह^{स०अ०} के चचाज़ाद भाई (इब्ने अब्बास) और हसन बिन अली^{अ०स०} नव्वे हज़ार अपने शियों की फौज लिये हुए मौजूद हैं। खुदा की क़सम अगर उसने इधर का रूख़ किया तो वह देखेगा कि मैं तलवार लिये हुए सामने मौजूद हूँगा और बड़ी शदीद जंग करूँगा। मुआविया को मालूम हो गया कि उस शख्स को धमकियों से मुतअस्सिर नहीं किया जा सकता। जब इमाम हसन^{अ०स०} ने सुल्ह फ़रमाई और मुआविया की सलतनत मज़बूत हो गई तो ज़ियाद इस्तख़र (फ़ारस का क़िला) में क़िला बन्द हो गया।¹¹ मुआविया ने उसे अमान नामा लिखा कि तुम मेरे पास आ जाओ। जो कुछ तुम कहोगे वह मैं तुम्हें दूँगा। चुनौतिये ज़ियाद, मुआविया के पास आया और मुआविया की बारगाह में उसका

¹¹ तबरी जि/6, पेज/97

रसूख बढ़ता चला गया। यहाँ तक कि सन 44 हिजरी में मुआविया ने उसे अपना भाई ज़ाहिर किया।¹² ज़ाहिर है कि एक ऐसा शख्स जिसके असली बाप का पता न हो और हो भी तो वह एक गुलाम के सिवा कोई न हो वह एक दम शहनशाहे वक्त्त का भाई बन जाये इससे बढ़कर उसकी इज़्ज़त क्या हो सकती है। मुआविया ने कहा: यह मेरे बाप अबूसुफियान के नुत्फ़े से है और उसकी गवाही किसने दी? अबू मरयम सलूली ने जो कब्ले इस्लाम ताएफ़ में शराब बेचता था। उसने कहा कि अबू सुफियान मेरे शराब खाने में आया और मुझसे एक इस किस्म की औरत को बुला देने को कहा जो उस रात में उसकी दिलचस्पी का बाइस हो। मैंने सुमय्या को उसके पास बुला दिया और इस तरह अबू सुफियान और सुमय्या में तअल्लुकात नाजाएज़ पैदा हुए और उन तअल्लुकात से ज़ियाद की विलादत हुई। एक शख्स ने कबील—ए—बनी मुसतलक में से जिसका नाम यज़ीद था गवाही दी की मैंने अबू सुफियान को यह कहते सुना था कि ज़ियाद मेरे नुत्फ़े से है। हालाँकि पहले ज़ियाद ने कूफ़े में आकर वहाँ के लोगों से यह ख्वाहिश की थी कि तुम मुआविया के साथ मेरी कराबत के लिए गवाही दे दो। उन सबने इन्कार किया कि हम झूठी गवाही न देंगे। यहाँ से मायूस होकर वह बसरा गया और वहाँ एक शख्स गवाही देने के लिए तय्यार हो गया।¹³ इस सुबूत को काफ़ी समझा गया और ज़ियाद मुआविया के भाई करार पा गए। इस बात से मुसलमानों में और बिल—खुसूस सहाबा के तब्के में बड़ी बेचैनी पैदा हुई क्योंकि पैगम्बरे इस्लाम^{स0अ0} का यह इरशाद मुतवातिर

¹² अल बुज़रा वल किताब पेज/17

¹³ तबरी जि/6, पेज/122

तौर पर सबको मालूम था कि “vyony Qjk'k oyevkfgy gt j” यानी “बच्चा अस्ली शौहर की तरफ़ मन्सूब होगा और ज़ानी के लिए बस पत्थर हैं।” मगर इक्तेदारे हुकमत के कान अवाम की चीख़ पुकार सुनने से बालातर होते हैं। उन्होंने कोई परवा नहीं की। उनके लिए इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि इस ज़रिये से उन्होंने ज़ियाद और उसकी औलाद को हमेशा के लिए ख़रीद लिया।

चुनानचे जब ज़ियाद के ज़रा सर उठाने का अन्देशा पैदा होता तो यह एहसान याद दिला कर उसको सर झुकाने पर मजबूर कर दिया जाता था जैसा कि एक मरतबा जबकि ज़ियाद बहुत से तहाएफ़ लेकर मुआविया के पास आया जिनमें जवाहरात का एक निहायत नफीस गुलूबन्द भी था और मुआविया उसको देखकर बहुत खुश हुए तो ज़ियाद ने ब—तौरे फ़ख़ कहना शुरू किया। हुज़ूर देखिये मैंने आपके लिए किस तरह इराक़ को पामाल कर दिया है और किस तरह वहाँ के चप्पे चप्पे पर आपका तसल्लुत कायम कर दिया है और वहाँ की हर लज़्ज़त व नेअमत आपके कदमों पर लाकर डाल दी है। यह सुनकर मुआविया अभी कुछ कहने न पाये थे कि यज़ीद बोल उठा। तुमने यह सब कुछ किया तो कमाल क्या किया? हमने जो तुम को कबील—ए—सकीफ़ की गुलामी से निकाल कर कुरैशी होने की इज़्ज़त दे दी और उबैद की फ़रज़न्दी के बजाये अबू सुफियान की फ़रज़न्दी का शरफ़ अता कर दिया और दफ़तर में क़लम की घिस घिस से ऊँचा करके मिम्बरों की बलन्दी नसीब कर दी।¹⁴

“cfd;k iit u0]]]]]]]]]]”

¹⁴ तबरी जि/6, पेज/123

अहले मज़हब की तरफ़ से मज़हब की ज़रूरत पर बड़ा जोर दिया जाता है लेकिन रौशन खयाल तबके में से बाज़ लोगों का खयाल है कि यह मानी हुई हकीकत है कि इंसानी फ़ितरत में एक पेशीदा कुव्वत मौजूद है जिसका नाम ज़मीर है। उसमें मज़हब के काएम मक़ाम बनने की सलाहियत है। यह ताक़त तमाम हालात में हमारे हरकात व सकानात की कड़ी निगरानी करती, हमें हमारे फ़राएज़ की तरफ़ तवज्जो दिलाती, जुल्म व ज़ौर और हर किस्म के ख़िलाफ़े अख़लाक़ कामों से बाज़ रखती, अच्छाईयों की तरफ़ दावत देती और बुराईयों से रोकती, हमारे पस्त और रकीक कामों से उसे सख़्त दुख पहुँचता है। जब आदमी कोई मनाफ़िए इंसानियत काम करता, किसी कमज़ोर और बेबस को अपने जुल्म व सितम का निशाना बनाता है तो ज़मीर अपनी अदालत में उसे तलब करके फ़ैसला करता और उसको मुस्तौजिबे सज़ा क़रार देता है। बेशक ज़मीर की तरफ़ से कोई ज़ाहिरी और जिस्मानी सज़ा नहीं दी जाती, वह बातिनी और रूहानी सज़ा देता, मुजरिम के दिल व दिमाग़ को बेचैन करता, उसको पैहम मलामत और सरज़निश के चरके लगाता, उसकी खुशगवार और शीरीं ज़िन्दगी में तल्ख़ी पैदा कर देता है अगर ज़मीर बहुत जानदार या जुर्म बहुत ज़्यादा संगीन है तो कभी ये सज़ा मुजरिम की ज़िन्दगी को तहोबाला कर देती है, वह बीमार पड़ जाता, पागल हो जाता, खुदकुशी कर डालता है। तमाम लोगों के ज़मीरों को इल्मे नफ़स के

उसूल के मुताबिक ज़िन्दा और ताक़तवर बनाया जा सकता है तरबियते ज़मीर के बाद मज़हबी उसूल और तालीमात की ज़रूरत बाकी नहीं रहती, जो काम अम्बिया व मुरसलीन के हाथों अंजाम पाता है उसी की तकमील अकेला हमारा ज़मीर कर देगा।

इस ऐतेराज़ के तशफ़्फ़ी बख़्श तौर से दूर होने के लिए मुनदर्जा ज़ेल उमूर की तैज़ीह ज़रूरी है।

1—ज़मीर यानी चे?

2—ज़मीर के मुख़तलिफ़ दर्जे।

3—फ़सलए अक्ल और ज़मीर।

4—आदात व रवासिम का ज़मीर से तअल्लुक़।

5—ज़मीर की आवाज़ और तक़रारे अमल।

6—क्या ज़मीर को धोखा दिया जा सकता है?

7—दूसरे फ़ितरी जज़बात और ज़मीर के दरमियान तसादुम।

1&t e h j D ; k g \

इसमें कोई शक नहीं कि इतना हर शख़्स महसूस करता है कि मुझमें एक पोशीदा कुव्वत मौजूद है जो मेरी रफ़तार व गुफ़तार, यहां तक कि मेरे नज़रियात व अफ़कार की निगरां है। यह सही है कि सब लोग इस हकीकत को यकसां तौर पर नहीं महसूस करते हैं लेकिन ऐसा कोई सही दिमाग़ नहीं मिलेगा जो इस कुव्वत के वुजूद का इंकार करे।

यह पोशीदा ताक़त कभी चैन से नहीं बैठती, हम सब महसूस करते हैं कि वह बराबर हमें अच्छे कामों की तरफ़ मुतावज्जे करती है और बुरे कामों से बाज़ रखती है। वह पैहम बलन्द आवाज़ से हमसे कहती है:—

अहद शिकनी न करो, जुल्म व तअदी के पास न जाओ। कमजोरों की मदद करो। एक दूसरे के साथ नरमी से पेश आओ, जिन लोगों की गोद में तुमने परवरिश पाई है, जिन्होंने तुम्हारी तालीम व तरबियत का बोझ अपने कांधों पर उठाया है उनकी ताज़ीम करना तुम्हारा फ़रीज़ा है, तुम्हें हमेशा हक़ शनास, पाकदामन और रास्तगो होना चाहिए। अगर ज़मीर के तकाज़े के खिलाफ़ हम कोई काम करना चाहते हैं तो वह हमसे जंग पर फ़ौरन तैयार हो जाता और हमारे दिल व दिमाग़ की फ़ज़ाओं में एक तूफ़ान, एक इंक़ेलाब, एक अज़ीम तहो बालगी पैदा कर देता है, वह अंदरूनी तूफ़ान आंखों से ओझल रहता है लेकिन उसके असरात निगाहों के सामने होते हैं, इस इंक़ेलाब की गम्माजी, चेहरे का उड़ा हुआ रंग, मिज़ाज में चिड़चिड़ापन करता है। रातों की नींद उड़ जाती है, दिलो दिमाग़ सही तौर पर काम नहीं करते। इसके बिलमुकाबिल अगर किसी काम के इरादे के वक़्त हमारे दिल व दिमाग़ में कोई तूफ़ानी कैफ़ियत न पैदा हो, हमारी रूह बिल्कुल साकिन और मुतमइन हो, तो उसके मानी यह है कि हमारा ज़मीर हमारे इरादे का हम आहंग और हमक़दम है। इंसान की सरकशी जब ज़मीर की आवाज़ की तरफ़ मुतावज्जेह नहीं होने देती और इंसान तकाज़ाए ज़मीर के खिलाफ़ कोई काम कर बैठता है तो वह फिर सरज़निश पर आमादा होता है, इंसान पर एताराज़ की बौछार शुरू कर देता, अपने इस इक्दाम से वह इंसान के दिल को तकलीफ़ पहुंचाता, अपनी अदालत से उसके खिलाफ़ फ़ैसला सादिर करता, उसे रूहानी सज़ा देता, उसकी रूह को कोड़े लगाता और उसे तौबा पर तैयार करता है।

अकसर देखा गया है कि लोग किसी जुर्म के इरतेकाब के बाद बहुत ज़्यादा पशीमान होते हैं। उन्हें ऐसा महसूस होता है कि जैसे उनके दिल व दिमाग़ में आग लगी है, उनकी रूह झुलसी जा रही है, जैसे किसी ने उनके जुर्म की हौलनाक फ़िल्म बना ली है, जिसे वह थोड़े-थोड़े वक़फ़े से मुजरिम की आंखों के सामने ले आता है, जैसे उस मज़लूम और बेगुनाह के वह आखिरी दिलख़राश फ़िकरे जिनसे उसने रहम की इल्तेजा की थी किसी ने रिकार्ड कर लिए हैं जिन्हें वह कभी—कभी मुजरिम को दिखा देता है।

ज़मीर की तकलीफ़ देह हरकतों से छुटकारों की खातिर कभी मुजरिम अपने को खुद अदालतों में पेश करके इक़्ारे जुर्म कर लेते हैं, क़ानून की तलवार के नीचे अपने हाथ से अपना गला रख देते, जिस ख़न्जर से किसी मज़लूम की ज़िंदगी को ख़त्म किया था उसी से अपना सीना चाक कर डालते हैं।

दूसरी जंगे अज़ीम में जिस फ़ौजी अफ़सर ने ऐटम बम से जापान के दो शहरों को चंद लमहों में तबाह व बर्बाद कर डाला था, उसका किस्सा सबके पेशे नज़र है। यही हुआ कि उसने बम फेंक कर आबाद शहर को मिनटों में खण्डर बना दिया, हज़ारों बेगुनाह अख़खास, शीर ख़्वार बच्चों, अस्पतालों के बेबस मरीजों और बे ज़बान जानवरों को नीस्त व नाबूद कर दिया, लेकिन अब ज़मीर के दबाव ने उसे पागल बना दिया है। एहसासे जुर्म ने मुजरिम के दिल व दिमाग़ में इंक़ेलाब पैदा कर दिया।

इसके बर खिलाफ़ इंसान जब किसी अच्छे काम का अज़्म करता है तो ज़मीर उसे मज़ीद रग़बत दिलाता, ऐसे काम के अंजाम पा जाने के बाद ज़मीर शाबाश कहता और

तारीफ़ करता, एक मर्तबा नहीं, जब कभी इंसान को अपना वह काम याद आता तो ज़मीर आगे बढ़कर उसकी मदद करता है। इसी लिए ऐसे मौके पर इंसान के दिल में मुसर्त व इबेसात, गुरुर व सरबलंदी के ऐहसास से एक तमव्वुज (लहेर) पैदा हो जाता है। आदमी जब किसी अच्छे या बुरे काम के अंजाम देने में मसरूफ़ होता तो ज़मीर उस मौके पर इतमिनान से नहीं बैठता बल्कि पूरी ताक़त से अपना फ़रीज़ा पूरा करता है। पहली सूरत में इंसान को सहारादेकर उस नेक काम की तकमील करता और दूसरी बाज़ सूरत में उसे बोज़ रखने के लिए अपनी एडी चोटी का जोर सर्फ़ कर देता है अच्छे कामों के अंजाम देने के बाद इंसान में जो रूहानी बालीदगी पैदा होती वह उसी ज़मीर की कार गुज़ारी का नतीजा है। यूँही पस्त और रकीक कामों की अंजाम देही के मौके पर इंसान का तज़बज़ुब, उसके चेहरे का उड़ा हुआ रंग, उसके हाथों की थरथराहट, उसकी ज़बान की लुकनत, उसके पैरों की कपकपाहट, उसके दिल की धड़कन, इसी ज़मीर की मोअस्सर कार गुज़ारी के असरात हैं।

शायद सिवाए इन आसार के ज़मीर की कोई हमागीर तारीफ़ मुमकिन नहीं है जामे तारीफ़ की कोशिश भी ज़रूरी नहीं है, क्योंकि रूह और दूसरी बातिनी कुव्वतों की तरह ज़मीर भी एक पेशीदा हकीकत है जिसके पहचनवाने के लिए उसके आसार का सहारा लिया जा सकता है। कमाल से इश्क़ व मुहब्बत, नक्स व ऐब से नफ़रत इंसानी फ़ितरत का तकाज़ा है। मुमकिन है कि हकीकते ज़मीर इसी कुदरती तकाज़े की एक झलक हो। बहर हाल यह बात यकीनी है कि फ़ितरते बशरी में इस तरह की कुव्वत मौजूद है जिसके मख़सूस और नुमायां

असरात हर शख्स महसूस करता है।

2&ejkfr: tehj dk b[krlykQ

तमाम इंसानों के ज़मीर की कुव्वत यकसॉ नहीं है। ज़मीर की ताक़त और कमज़ोरी के लिहाज़ से ऐसे अफ़राद तक के दरमियान तफ़ावुत नज़र आता है जिन्होंने एक तरह के माहौल में परवरिश पाई और ज़िंदगी बसर की, जो अपनी उम्र और अपने मालूमात की मिक्दार के लिहाज़ से एक दूसरे के बराबर हैं। वाक़िया यह है कि ज़मीर की हुक्मत हमारी आम हुक्मतों से शबाहत रखती है। बाज़ लायक़ और बाज़ ना लायक़ हैं कुछ ताक़तवर और कुछ कमज़ोर हैं। बाज़ लोग किसी यतीम बच्चे की आंखों को अश्कबार देख कर बेचैन हो जाते हैं। किसी मज़लूम, बे ख़ता के रूख़सार पर तमांचा पड़ना उनके दिल को तहो बाला कर देता है अगर खुद उनके हाथ से किसी पर मामूली सी ज़ियादती हो जाए तो मुद्दतों इसी की फ़िक्र में रहते और किसी तरह उसे भूलते नहीं हैं। उनके मुक़ाबिल ऐसे अफ़राद भी नज़र आते हैं जिनकी आंखों ने ख़ाको खून में लोटते हुए बेगुनाह इंसानों के लाशे देखे हैं, कुछ देर उनका दिल बेचैन रहा। वह इज़हारे अफ़सोस करते रहे और उसके बाद इस तरह अंजान हो गए जैसे उनके सामने कुछ हुआ ही न हो। इसी दुनिया में ऐसे सख़्त दिल अफ़राद भी हैं जिनके ज़मीर बिल्कुल मुर्दा हो चुके हैं, वह बड़े से बड़े जुर्म का इर्तेकाब करते हैं लेकिन उनके दिल में हल्की सी लरज़िश भी पैदा नहीं होती, वह कोई बेचैनी महसूस नहीं करते। यह सही है कि ज़मीर एक फ़ितरी कुव्वत है लेकिन ऐसा नहीं है कि वह तग़य्युर व तबहुल के काबिल न हो। इल्मी और इल्मी तरबियत से मोअस्सर तलकीन और

तालीम से मुर्दा ज़मीर को ज़िन्दा किया जा सकता, उसकी कमज़ोरियों को दूर करके उसे ताक़तवर बनाया जा सकता है। इसी तरह मुमकिन है कि अगर बराबर ज़मीर के तकाज़ों के खिलाफ़ अमल दरआमद होता रहे, उसके तकाज़ों को मुसलसल मुस्तरिद कर दिया जाता रहे तो रफ़ता-रफ़ता उसकी आवाज़ धीमी हो जाए, उसका ज़ोर घट जाए।

3& tehj vkj vDy dk Qilyk

बाज़ लोगों ने इंसानी ज़मीर को एक मुनसिफ़ (जज) से तशबीह दी है। यह तशबीह बाज़ हेसियतों से दुरुस्त है। लेकिन उसमें एक बड़ा अजीब भी है, वह यह कि दूसरे जजों के पास सोचने और समझने की कुव्वत है मगर ज़मीर नेकी और बदी की तशख़ीस में अक्ल का मोहताज है, अच्छाई और बुराई का फैसला खुद नहीं कर सकता। दूसरे अलफ़ाज़ में यूँ कहा जाए कि ज़मीर किसी कुव्वते इदराकी का नाम नहीं है।

इदराकात सिर्फ़ अक्ल के वसीले से हासिल होते हैं। इंसान अक्ल व फ़िक्र से सहारा लेकर अच्छाई और बुराई का फैसला करता, उसके बाद ज़मीर अपनी जगह से उठ कर उन अच्छाईयों के बजा लाने की दावत देता और उन बुराईयों के इस्तेकाब से रोकता है जिनके मुताल्लिक अक्ल पहले फैसला कर चुकी है। इसका नतीजा वाज़ेह है कि अगर नेक व बद के दरमियान इस्तेयाज़ में अक्ल से चूक हो गई तो उसकी पैरवी की वजह से यकीनन ज़मीर भी गुमराह हो जाएगा। इस मतलब की वज़ाहत के लिए मुंदरजा ज़ेल मिसाल की तरफ़ तवज्जो फ़रमाइये। आप इस ज़माने में देख रहे हैं कि दो बड़े सियासी मुल्कों के तरफ़दार, सरमाया दारी और कम्युनिज़्म के हामी एक दूसरी के मुक़ाबिल

सफ़ बस्ता हैं। एक तरफ़ के फ़लसफ़ी दूसरी तरफ़ के फ़लसफ़ियों के मुक़ाबिल, एक ग़िरोह के साइन्सदां दूसरे ग़िरोह के साइन्सदानों के मुक़ाबिल, एक मसलक के सियासी लीडर दूसरे मसलक के सियासी लीडरों के मुक़ाबिल, एक जमाअत के इन्शा परदाज़ दूसरी जमाअत के साहिबाने कलम के मुक़ाबिल, एक तरफ़ की फ़ौजें दूसरी तरफ़ की फ़ौजों के सामने इस्तादा (खड़ी) हैं। दोनों गिराहों के दरमियान सर्द व गर्म जंग छिड़ी हुई है। हर एक इल्मी और जंगी हथियारों से दूसरे को शिकस्त देने के लिए कोशां है। मुमकिन है कि दोनों गिराहों के दरमियान बकसरत ऐसे अशख़ास मौजूद हों जो उन दोनों सियासी मुल्कों में से किसी को सही न समझते हों।

उन्हें किसी एक की तरफ़दारी पर उनके शख़्सी मुनाफ़े ने आमादा किया हो। लेकिन इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता कि दोनों तरफ़ की सफ़ों में ऐसे अफ़राद ज़रूर मौजूद हैं जो अपने मसलक को सही समझते हुए इसकी हिमायत कर रहे हैं, मशरिक व मगरिब के इन्शा परदाज़ों के नताएजे कल्मी के सरसरी मुताल्लिए से इ स बात की तसदीक़ की जा सकती है। हम देख रहे हैं कि उनमें से हर एक दूसरे को नीस्त व नाबूद करने में फ़ख़्र महसूस कर रहा है, हर एक दूसरे के तहस नहस करने के लिए अपनी कोशिशों को इंसानियत की बहुत बड़ी ख़िदमत समझ रहा है। इससे पता चलता है कि हर एक का ज़मीर इसके इक्दामात को पसंद कर रहा, हर एक का ज़मीर दो मुख़तलिफ़ रास्तों को तै कर रहा है। इसी बिना पर दोनों ग़िरोह खुश और मुतमइन हैं, कोई भी अपने मुजरिम को नहीं समझ रहा है।

यह मन्ज़र उस वक़्त हमें क्यों नज़र आ रहा

है? वजह ये है कि हर एक का ज़मीर उसकी अक्ल व फ़िक्र के फ़ैसले की पैरवी कर रहा है। ज़ाहिर है कि हकीकत दो मुख़्तलिफ़ सिमतों में नहीं हो सकती। यकीनन इन दोनों मसलकों में से कोई एक या दोनों नुक्ते सेहत से हटे हुए हैं, किसी ग़िरोह की कुव्वत फ़ैसले से चूक हो गई है। इसी चूक ने ज़मीर को भी ग़लत रास्ते पर ग़ामज़न बना दिया है।

4&jokflek vknkr l t.ehj dk rvYyd

माहौल और आम रवासिम व आदात भी ज़मीर के रुजहानात पर असर अंदाज़ होते हैं अक्सर औकात बहुत सी ग़लत बातें समाज का जुज़ बन जाती हैं। उनके उमूमी रवाज की वजह से उनका वाकई और हकीकती नक्स आंखों से ओझल हो जाता है। इस किस्म के कामों के अंजाम देने के बाद बहुत कम लोग मिलेंगे जिनका ज़मीर बेचैनी महसूस करे। इक्का-दुक्का आदमी दस्तयाब हो सकते हैं जिनकी अक्ले फ़ितरी के हाथ पाओं ने रवासिम व आदात की ज़न्जीरों को तोड़ डाला और उन्हें सौ फ़ीसदी सही और आज़ाद फ़ैसला करने पर क़ादिर बना दिया है। मसलन जो लोग जानवरों को ज़िबहा करना, उनका गोश्त खाना मज़हबी तौर पर ममनू समझते हैं किसी जानवर के गले पर छूरी चलना या उसका गोश्त खाना उनके ज़मीर को बेचैन कर देता है, उसके बर ख़िलाफ़ मुसलमानों के माहौल में यह बातें उमूमन राइज हैं और उन्हें उनसे कोई ना गवारी महसूस नहीं होती।

यह दुरुस्त है कि हमारे बाज़ बरादराने वतन का यह ख़याल सही नहीं है। किसी हैवान के लिए इससे बढ़कर क्या कमाल हो सकता है कि वह अपने से बलंदतर मख़लूक के जिस्म का जुज़ बन जाए, जिस तरह ख़ाक के ज़र्रे

नबातात का जुज़ बनते, जिस तरह नबातात हैवानात का जुज़ व जिस्म क़रार पाते हैं, उसी तरह जानवर अगर अपनी मौजूदा सतहे वुजूद से मुन्तक़िल होकर किसी बालातर सतहे वुजूद तक पहुंचे तो क्या क़ाबिले ऐतेराज़ बात है। यह वही क़ानूने तकामुल है जो सारे जहाने आफ़रीनिश में नाफ़िज़ व राएज है। लेकिन अगर बिलफ़र्ज बरादराने वतन के इस तर्ज़े फ़िक्र को सही मान लिया जाए तो जानवरों के साथ हमारे बर्ताव से हमारे ज़मीरों के बेचैन न होने की वजह सिवाए इसके और क्या हो सकती है कि मुसलमानों के समाज में यह बर्ताव राएज हो गया है। आम तौर से कहा जाता है कि जब कोई बुरी बात समाज में दाख़िल हो जाए तो इसकी बुराई कम हो जाती है इसका मतलब यही है कि ऐसे पस्त समाज में रहने की वजह से हमारा ज़मीर इस पस्ती का आदी बन गया। इसकी कुव्वते फ़ैसला ज़ंग आलूद, उसकी चश्मे बसीरत कमज़ोर हो गई।



%cfd;k i:t u0 11 dk]]]]]]%

ज़ाहिर है यज़ीद ऐसे नौ उम्र की ज़बान से ज़ियाद ऐसे सिन रसीदा का इन अल्फ़ाज़ को सुनकर बर्दाश्त करना एहसासे कमतरी ही का नतीजा था जो नसबी एतेबार से उसमें मौजूद थी। फिर इस सूरत में ज़ियाद की नस्ल अब कभी मुआविया या उनके बाद यज़ीद के मुक़ाबले में सरताबी की कहाँ हिम्मत रख सकती थी। यह दूर रस असर था उस सियासी इक़दाम का जो ज़ियाद को भाई बनाकर किया गया था। चाहे शरीयत इस पर कितनी भी सरज़निश का मुस्तहक़ क़रार देती हो।

मुख्य समाचार

;eu e| yk[kk tku tku dk
[kn'kk vDoke eÜkfgnk

अहलेबैत न्यूज एजेंसी—अबना के मुताबिक अक्वामे मुत्तहिदा के शोब—ए—इन्सानी इम्दाद के सर बराह मार्क लूकाक ने यमन की सूरतेहाल के बारे में ख़बरदार करते हुए कहा है कि अगर सऊदी अरब ने फ़ज़ाई, समन्दरी और ज़मीनी रास्ते से यमन तक रसाई न दी तो दुनिया को हालिया अशरे के सबसे बड़े इन्सानी अलमिये का सामना करना पड़ेगा और लाखों लोग मौत के मुँह में चले जाएंगे।

दूसरी जानिब अमरीका के साबिक नाइब वज़ीरे ख़ारिजा निकूल्स बर्न्ज ने भी यमन में इन्सानी सूरतेहाल को इन्तिहाई वहशतनाक करार देते हुए कहा है कि अमरीका फ़ौरी तौर पर सऊदी अरब की हिमायत बन्द करे।

निकूल्स बर्न्ज ने भी सऊदी अरब की जानिब से यमन के फ़ज़ाईए ज़मीनी और समन्दरी मुहासिरे के नतीजे में पैदा होने वाली इन्सानी सूरतेहाल के बारे में सख्त ख़बरदार किया है।

यमन की सूरतेहाल के बारे में शदीद इन्तिबाहात के बा वजूद अमरीकी एवान नुमाइन्दगान ने एक बिल की मन्ज़ूरी दी है जिसके तहत यमन के मज़लूम अवाम पर वहशियाना बम्बारी करने वाले सऊदी अरब के जंगी तय्यारों को ईंधन की फ़राहमी की इजाज़त दी गई है।

दूसरी जानिब इत्तिलाआत हैं कि यमन पर जारेहियत करने वाला सऊदी इत्तिहाद मुहासिरा ख़त्म करने के एलान के बा वजूद ईंधन और ग़िज़ाई अशिया लाने की इजाज़त नहीं दे रहा है और अब तक ऐसे 7 बहरी जहाज़ों को यमन की बन्दरगाह हदीदा की जानिब आने से रोक चुका है।

यमन में इन्सानी हुक्क के लिए काम करने वालों का भी कहना है कि इन्सानी अलमिये को रोकने के लिए हदीदा की बन्दरगाह और सन्आ के हवाई अड्डे को भी खोला जाना ज़रूरी है।

इससे पहले हयूमन राईट्स वॉच ने मंगल के रोज़ जारी होने वाली एक रिपोर्ट में कहा था कि सऊदी अरब के इस दावे में कोई सदाक़त नहीं है कि वह यमन का मुहासिरा ख़त्म कर रहा है।

हयूमन राईट्स वॉच ने अक्वामे मुत्तहिदा की सलामती कौन्सिल से मुतालिबा किया है कि वह यमन के लिए इन्सानी इम्दाद की फ़राहमी में रुकावट डालने वाले मुल्कों के ख़िलाफ़ पाबंदियाँ आइद करे।

काबिले ज़िक्र है कि सऊदी अरब ने अमरीका और बाज़ अरब ममालिक की हिमायत से, यमन को 3 साल से जारेहियत का निशाना बना रखा है और उसकी ज़मीनी, फ़ज़ाई और समन्दरी सरहदों को बन्द कर दिया है।

मार्च 2015 से जारी इस वहशियाना जारेहियत के नतीजे में हज़ारों यमनी शहरी शहीद और ज़ख्मी हो चुके हैं जबकि मग़रिबी एशिया के इस ग़रीब इस्लामी मुल्क की बुनियादी तन्सीबात को तबाह कर दिया गया है।

जंग और मुहासिरे की वजह से यमनी अवाम को ग़िज़ाई अशिया और दवाओं की शदीद क़िल्लत का सामना है जबकि हैजे समैत मुताहिद बीमारियों ने भी उन्हें घेर रखा है।

y [kuÅ e v d h n r o , g f r j k e l e u k ; k x ; k v j c b u g l u h

चेहलुम हुआ तमाम चेहलुम हुआ तमाम,

10 नवम्बर जुमे को अरबईने हुसैनी के मौके पर विक्टोरिया स्ट्रीट वाके इमामबाड़ा नाज़िम साहिब से जुलूस बरामद हुआ। नख्वास, टूरियागंज, बाज़ारख़ाला, हैदरगंज, एवरेडी चौराहा होते हुए करबला तालकटोरा पहुंचा जहां अलविदाई मजलिस के बाद जुलूस ख़त्म हुआ। इमामबाड़ा नाज़िम साहिब में जुलूस से क़ब्ल मजलिस को काइदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी इमामे जुमा लखनऊ ने ख़िताब किया।

मजलिस को ख़िताब करते हुए काइदे मिल्लत ने हज़रत इमाम हुसैन(अ0) की शहादत के बाद अहले हरम को कैद करके कूफ़ा और शाम ले जाने और कैदख़ाने का मनज़र बयान किया, मौलाना ने अहले हरम की रिहाई के बाद करबला पहुंचने का मनज़र बयान किया तो अक़ीदतमन्द खुद पर काबू न रख सके और उनकी आंखों से आंसू जारी हो गए। मजलिस के बाद इमामबाड़े से मातमी अन्जुमनें अपने अलम के साथ नौहाख़्वानी और सीनाज़नी करती हुई निकलीं।

मातमी अन्जुमों के साहिबे बयाज़ चेहलुम पर मुशतमिल क़दीम नौहे पढ़ रहे थे जिन्हें सुनकर अक़ीदतमन्दों की आँखें नम हो गईं। इमामबाड़े से सबसे पहले अन्जुमने अब्बासिया अपने अलम के साथ नौहाख़्वानी व सीनाज़नी करती हुई निकली जिसके बाद अन्जुमनों के अपने अलम के साथ निकलने का सिलसिला शाम तक जारी रहा और जुलूस में सबसे पीछे अन्जुमने रौनके दीने इस्लाम, जनाब औन(अ0) व मुहम्मद(अ0), जनाब अली अकबर(अ0), जनाब अली असगर(अ0) और हज़रत इमाम हुसैन(अ0) के शबीहे ताबूत और अमारियाँ, इमाम हुसैन(अ0) की सवारी की निशानी जुलजनाह और हज़रत अब्बास(अ0) की निशानी अलम के साथ नौहाख़्वानी व सीनाज़नी करती हुई शामिल हुईं। शाम तक मातमी अन्जुमनों के करबला तालकटोरा पहुंचने का सिलसिला जारी रहा।

करबला तालकटोरा में अलविदाई मजलिस के बाद जुलूस इख़िताम पज़ीर हुआ। जुलूस में इराक़ की तर्ज़ पर कई नौजवान हुसैनी परचम लहरा रहे थे। रंग बिरंगे परचमों पर लब्बेक या हुसैन(अ0), या हुसैन(अ0), या अब्बास(अ0) लिखा हुआ था। करबला तालकटोरा में महमूदाबाद की अन्जुमने हैदरी की जानिब से काफ़िल—ए—बनी असद का मनज़र पेश किया गया। काफ़िल—ए—बनी असद के मनज़र में शामिल तबरूकात की ज़ियारत करके अक़ीदतमन्दों ने दुआएं माँगीं।

मजलिस के बाद 18 बनी हाशिम के शबीहे ताबूत, अलम और जुलजनाह की ज़ियारत कराई गई। जुलूस के दौरान बड़ी तादाद में रज़ाकारों ने जुलूस में साफ़ सफ़ाई की ज़िम्मेदारी संभाली। जुलूस में शामिल रज़ाकारों ने क्लीन जुलूस मुहिम चलाई। मुहिम से वाबस्ता रज़ाकार अपने हाथों में पाली बैग लिए हुए थे जिसमें चाय, कॉफी के कप और तबरूक के ख़ाली डिब्बे वगैरा रख रहे थे। मुस्लिम यूथ तन्जीम के 150 से ज़्यादा रज़ाकारों ने जुलूस के रास्ते में सबीलों पर डस्टबिन रखकर लोगों से चाय कॉफी और ख़ाली डिब्बों को डस्टबिन में डालने की अपील की। फ़्लोरसेंट जैकेट, हाथों में दस्ताने पहने रज़ाकार बड़े-बड़े पालीबैग में सड़क पर पड़े कूड़े को जमा करके लोगों से जुलूस को साफ़ रखने की अपील कर रहे थे। जुलूस में आज़म अली, आमिर, रज़ा अली वगैरा नौजवान लोगों को सफ़ाई के सिलसिले में बेदार कर रहे थे। जुलूस के रास्ते में सड़क के दोनों जानिब सबीलों का बन्दोबस्त किया गया था। सबीलों से अज़ादारों को चाय, पानी, कॉफी और तबरूक तक़सीम किया जा रहा था। इन सबीलों से बिरयानी, दाल—रोटी, दाल—चावल और फल भी तक़सीम किए गए।